गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा पटियाला, श्रीगंगानगर व नेपाल से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037
May-June 2026
Volume 14, Issue 5-6

Impact Factor :
7.834

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Editor :
Dr. Rekha Soni
Chief-Editor :
Dr. Naresh Sihag Adv.

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	07–07
2.	साहित्यिक पत्रकारिता और आधुनिक संदर्भ	डॉ. रेखा कुमारी त्रिपाठी	08–19
3.	**Constitutional Morality and Juvenile Justice : A Preventive Legal Framework for India**	**Ashwani Kumar Singh, Dr. Sandip Kumar Baghel**	**20-28**
4.	'ऊँ' सृष्टि का आदि स्वर	डॉ. शिव दर्शन दुबे	29–34
5.	रांगेय राघव के उपन्यासों में पारिवारिक संबंधों का स्वरूप	लक्ष्मण कुमार	35–40
6.	भूमंडलोत्तर हिंदी उपन्यासों में श्रमिक जीवन और संघर्ष (मुन्नी मोबाइल और अमर देसवा उपन्यास के सन्दर्भ में)	जितेन्द्र कुमार मीणा, प्रो. संजीव कुमार दुबे	41–49
7.	आधुनिक युग में टोपोलॉजिकल डेटा विश्लेषण (TDA) : गणितीय आधार, पद्धतियां और अनुप्रयोग	श्रीमती सरिता आचार्य	50–52
8.	'नागफनी' आत्मकथा में सामाजिक परिवेश	मोनिका	53–56
9.	**The Paradox of the Feminine : A Historical Analysis of Gender, Agency, and Social Stratification in Vedic India (c. 1500–500 BCE)**	**Koshinder Singh**	**57-60**
10.	**Standardization of Marking Procedures and Its Role in Fair Play, Sportsmanship, and Training Effectiveness in Physical Education and Sports**	**Ram Krishan Saran, Dr. Surjeet Singh Kaswan**	**61-66**
11.	असुर जनजाति का आर्थिक जीवन : एक अध्ययन	डॉ. प्रणय रंजन	67–72
12.	**Impact of Body Mass Index on Athletic Performance : A Physiological and Comparative Analysis**	**Shrawan Kumar Prajapat, Dr. Kamal Vijayvargia**	**73-74**
13.	**Impact of Coaching on the Personality Development of the Athlete**	**Motiram, Dr. Kamal Vijayvariga**	**75-77**
14.	**COMPARATIVE STUDY OF SPEED PERFORMANCE AMONG ATHLETES OF DIFFERENT SPORTS**	**Shiv Prakash, Dr. Kamal Vijayvargia**	**78-80**
15.	स्वामी विवेकानंद का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान	लोकेश कुमार, प्रो. डॉ० गोपेश कुमार शर्मा	81–85
16.	देवनागरी लिपि, हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति का संबंध	डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	86–91
17.	**VEDANTIC VIEW OF EVOLUTION**	**Pulak Chan Das**	**92-95**

18. भारतीयार और माखनलाल चतुर्वेदी के बीच समानता बाल साहित्य के संदर्भ में — के. आर. गुरू गोविंद विश्वत, अनुराधा पाकलपाटि — 96–103
19.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 5-6
पृष्ठ : 96–103

भारतीयार और माखनलाल चतुर्वेदी के बीच समानता बाल साहित्य के संदर्भ में

के. आर. गुरू गोविंद विश्वत,
शोधार्थी (UP24P9650003)
अनुराधा पाकलपाटि, शोध निर्देशिका एवं सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग, वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (विस्टस)

सार :

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती और माखनलाल चतुर्वेदी दो भिन्न भाषायी परंपराओं–तमिल और हिंदी–से संबद्ध होते हुए भी अपने काव्य-विचार और संवेदना में गहरी समानता रखते हैं। दोनों कवियों का साहित्य राष्ट्रप्रेम, मानवीय मूल्यों, प्रकृति-बोध और बाल-मन की सरलता को केंद्र में रखता है। बाल साहित्य को वे केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण का सशक्त माध्यम मानते हैं। भारती बालकों में निर्भयता, समानता और स्वतंत्र सोच का विकास करते हैं, जबकि चतुर्वेदी त्याग, कर्तव्यबोध और अनुशासन के संस्कार देते हैं। भाषा भिन्न होने पर भी दोनों का साहित्य बाल-व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

मूल शब्द :- बाल साहित्य, राष्ट्रप्रेम, मानवीय मूल्य, निर्भयता, प्रकृति-बोध, त्याग और कर्तव्यबोध, स्वतंत्रता चेतना, सांस्कृतिक समरसता, चरित्र-निर्माण।

प्रस्तावना :

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती और माखनलाल चतुर्वेदी दो भिन्न भाषायी परंपराओं – तमिल और हिंदी – से आते हुए भी विचार, संवेदना और काव्य -

दृष्टि में गहरी समानता रखते हैं। दोनों कवि राष्ट्रप्रेम, मानवीय मूल्यों, प्रकृति - बोध और बाल - मन की सरलता को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाते हैं। बाल साहित्य के संदर्भ में दोनों की काव्य - भाषा सहज, प्रेरणादायक और संस्कारपरक है, जो बच्चों में आत्मविश्वास, देशभक्ति और मानवीय चेतना का विकास करती है।

दोनों कवि स्वतंत्रता संग्राम के दौर के ऐसे युगद्रष्टा साहित्यकार हैं, जिनकी रचनाएँ केवल संवेदनाओं की अभिव्यक्ति तक सीमित न रहकर राष्ट्रीय चेतना, आत्मगौरव और जनजागरण की प्रभावशाली आवाज़ बन गईं।

- सुब्रमण्यम भारतीयार और माखनलाल चतुर्वेदी दोनों का साहित्य उस काल में विकसित हुआ, जब भारत अंग्रेज़ी शासन के अधीन था और स्वतंत्रता आंदोलन अपने विभिन्न चरणों से गुजर रहा था।
- यह वह समय था जब साहित्य केवल मनोरंजन का साधन न होकर राष्ट्रीय चेतना का वाहक बन गया था।
- भारतीयार दक्षिण भारत में और चतुर्वेदी उत्तर भारत में रहते हुए भी एक ही राष्ट्रीय पीड़ा, एक ही स्वप्न और एक ही लक्ष्य से प्रेरित थे – स्वतंत्र भारत के ओर। दोनों ने औपनिवेशिक दमन, सामाजिक असमानता और मानसिक गुलामी के विरुद्ध अपनी कविता को हथियार बनाया।

निर्भयता और आत्मबल पर ज़ोर देते हुए सुब्रमण्यम भारती ने कहा -

அச்சமில்லை அச்சமில்லை அச்சமென்பது இல்லையே(1)

अर्थात - मुझे कोई भय नहीं है, भय जैसी कोई वस्तु ही नहीं है। - भारतीयार निर्भयता को स्वतंत्रता की पहली शर्त मानते हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा -

वीरों का कैसा हो वसंत।(2)

अर्थात - दोनों कवि साहस और संघर्ष को राष्ट्रजीवन का मूल मानते हैं।

- भारतीयार केवल कवि नहीं, बल्कि दार्शनिक और समाज-सुधारक भी थे। वे वेदांत, भक्ति आंदोलन और आधुनिक राष्ट्रवाद – तीनों से प्रभावित थे।
- उनकी कविता में
    - आध्यात्मिक चेतना,
    - आत्मबल
    - कर्मयोग
    - समानता का दर्शन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
    - उन्होंने जाति-भेद, छुआछूत और नारी-असमानता का खुला विरोध किया। भारतीयार के लिए स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं थी, बल्कि सामाजिक और मानसिक भी थी। उनकी दृष्टि में स्वतंत्र भारत तभी संभव था जब समाज समान, शिक्षित और साहसी हो।
- माखनलाल चतुर्वेदी का राष्ट्रवाद अधिक नैतिक और भावनात्मक रूप में सामने आता है। वे हिंसा की बजाय त्याग, सेवा और आत्मसमर्पण को स्वतंत्रता का मार्ग मानते थे। गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव उनकी रचनाओं में स्पष्ट है।
- उनकी कविता में • तपस्या, • बलिदान, • आत्मसंयम, • कर्तव्यबोध प्रमुख तत्व हैं। वे मानते थे कि सच्चा देशप्रेम शोर में नहीं, बल्कि निःस्वार्थ कर्म में दिखाई देता है।

त्याग और आत्मसमर्पण पर ज़ोर देते हुए *भारतीयार ने कहा है कि -*

உயிர் கொடுத்து நாட்டை காக்கும் உயர்ந்த பண்பு

अर्थात - देश की रक्षा के लिए प्राण तक अर्पित करना ही महान गुण है।

माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा है कि -

मुझे तोड़ लेना वनमाली,

उस पथ पर देना फेंक।[3]

भारतीयार का बलिदान वीरता से जुड़ा है और चतुर्वेदी का बलिदान तपस्या से जुड़ा है।

- भारतीयार और चतुर्वेदी दोनों को "राष्ट्रकवि" कहा जाना केवल उपाधि नहीं, बल्कि उनके साहित्यिक योगदान की पहचान है। दोनों के लिए – कविता = राष्ट्र की आवाज़ और कवि = जागरण का प्रहरी। उनकी रचनाओं में राष्ट्र एक जीवंत सत्ता के रूप में उपस्थित है – माता, देवी और प्रेरणा के रूप में।

राष्ट्रकवि की भूमिका निभाते हुए भारतीयार ने कहा -

என் கவிதை தேசத்தின் குரல் - मेरी कविता राष्ट्र की आवाज़ है।

माखनलाल चतुर्वेदी ने भी कहा है कि -

कविता मेरे लिए देश - सेवा का साधन है।

दोनों के लिए कविता सौंदर्य नहीं, कर्तव्य है।

अंततः कहा जा सकता है कि सुब्रमण्यम भारतीयार और माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं, जिन्होंने कविता को राष्ट्रसेवा का माध्यम बनाया। भाषा भिन्न होने पर भी उनका उद्देश्य एक ही था – स्वतंत्रता, स्वाभिमान और जागृत राष्ट्र। आज भी उनकी रचनाएँ हमें साहस, कर्तव्य और देशप्रेम की प्रेरणा देती हैं। भिन्न भाषाओं में लिखते हुए भी एक ही राष्ट्रीय आत्मा के स्वर हैं। उनकी कविता केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की प्रेरणा और भविष्य की दिशा है।

बाल साहित्य के संदर्भ में :

महाकवि भारती और माखनलाल चतुर्वेदी दोनों ही बाल साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानते, बल्कि उसे चरित्र-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण

का आधार मानते हैं। दोनों की भाषा सरल, लयात्मक और भावप्रधान है, जो बालकों के मन में सहजता से उतरती है। प्रकृति, मातृभूमि, नारी, स्वतंत्रता और मानव-मूल्य दोनों की रचनाओं के केंद्रीय तत्व हैं। बच्चों को वे जिज्ञासु, साहसी और जागरूक नागरिक के रूप में देखना चाहते हैं, न कि केवल श्रोता या पाठक के रूप में।

प्रकृति प्रेमी :

भारती की अपनी இயற்கைப் பாடல்கள் कविताओं में प्रकृति जीवंत, मित्र और प्रेरक रूप में आती है, जो बाल मन के निकट है। चतुर्वेदी के यहाँ *प्रकृति और कविता* में प्रकृति नैतिक प्रतीक बन जाती है, जैसे पुष्प, पथ और मिट्टी। भारती प्रकृति से संवाद कराते हैं, चतुर्वेदी प्रकृति से शिक्षा।

समाज सुधार :

बाल मन और निर्भयता के बारे में महाकवि भारती के अनुसार भय का कोई स्थान नहीं है "அச்சமில்லை அச்சமில்லை அச்சமென்பது இல்லையே"। बाल साहित्य का उद्देश्य बच्चों को निडर, आत्मविश्वासी और स्वतंत्र सोच वाला बनाना है। यह पंक्ति बाल मन में साहस और आत्मबल का संचार करती है। चतुर्वेदी भी बालक को निर्भीक और आदर्श नागरिक के रूप में देखते हैं।

"வந்தே மாதரம்" भारतीयार का इस वाक्यांश देश भक्त को समाज में ज़ोर से जगाया।

"சாதிகள் இல்லையடி பாப்பா[5]" अर्थात हे बच्चे! इस संसार में जातियाँ नहीं हैं। यह पंक्ति बाल साहित्य में समानता, मानवता और सामाजिक समरसता का संदेश देती है और बचपन से ही भेदभाव-रहित दृष्टि विकसित करती है। माखनलाल चतुर्वेदी ने *पुष्प की अभिलाषा* में

"पुष्प की अभिलाषा है, मिट्टी में मिल जाना।"

यह पंक्ति त्याग, सेवा और विनम्रता का भाव सिखाती है। बाल साहित्य में ऐसे आदर्श बच्चों के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। भारती जहाँ निर्भयता सिखाते हैं, वहीं चतुर्वेदी त्याग और कर्तव्यबोध।

"என்றும் தாய்மண்ணே போற்றி!"

भारती मातृभूमि को माता के रूप में देखते हैं। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में राष्ट्रप्रेम और आत्मसम्मान जगाते हैं। साथ - साथ चतुर्वेदी भी राष्ट्रभक्ति उनके काव्य की आत्मा है, जो बालकों को जिम्मेदार नागरिक बनाती है। भारती ने बच्चे प्रश्न करें, सोचें और निर्भीक बनें और चतुर्वेदी ने बच्चे उत्तरदायित्व, अनुशासन और आदर्श सीखें। एक ओर जिज्ञासा, दूसरी ओर मूल्यबोध – दोनों मिलकर संपूर्ण बाल व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

जहाँ महाकवि भारती को जनमानस और सांस्कृतिक परंपरा ने "महाकवि" के रूप में अमर किया, वहीं माखनलाल चतुर्वेदी को स्वतंत्र भारत में औपचारिक राष्ट्रीय और साहित्यिक सम्मानों के माध्यम से प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। दोनों ही कवि अपने-अपने भाषायी संसार में सर्वोच्च सम्मान के अधिकारी माने जाते हैं।

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती को औपचारिक पुरस्कारों से अधिक जनमानस और सांस्कृतिक चेतना का सम्मान प्राप्त हुआ। उनकी यह पंक्ति–

"என் நாடு என் உயிர்" (मेरा देश मेरा जीवन है)

– यह स्पष्ट करती है कि उनका सम्मान उनकी राष्ट्रभक्ति और जनजागरण से उपजा। इसी कारण तमिल समाज ने उन्हें स्वाभाविक रूप से "महाकवि" की उपाधि दी।

माखनलाल चतुर्वेदी को स्वतंत्र भारत में औपचारिक राष्ट्रीय और साहित्यिक सम्मान प्राप्त हुए। उनकी काव्य - पंक्ति–

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक"

– त्याग, राष्ट्रनिष्ठा और आत्मसमर्पण की भावना को प्रकट करती है, जिसके लिए उन्हें पद्म भूषण और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एकता के बारे में :

"செப்பு மொழி பதினெட்டு உடையாள் எனிற் சிந்தை ஒன்றுடையாள்!"

भारतीयार ने कहा और माखनलाल चतुर्वेदी ने भी स्मृति का वसंत में कहा गया है -

"नहीं चलो हिल-मिलकर झूलें, बने विहंग, झूलने झूलें"

हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक अखण्ड भारत को एक भारत श्रेष्ठ भारत करने का स्वप्न देखा और आज वह साकार हुआ। सबसे महत्वपूर्ण समानता यह है कि दोनों कवि अपने यूग की आवाज़ बने। उन्होंने अपने शब्दों से जनता को जगाया और साहित्य को स्वतंत्रता संग्राम की शक्ति बनाया।

इस प्रकार जहाँ भारती को लोकमान्यता और सांस्कृतिक परंपरा ने अमर बनाया, वहीं चतुर्वेदी को राष्ट्रीय संस्थाओं और पुरस्कारों ने प्रतिष्ठा प्रदान की। दोनों ही अपने-अपने साहित्यिक संसार में सर्वोच्च सम्मान के अधिकारी सिद्ध होते हैं।

महाकवि भारती के लिए स्वतंत्रता केवल राजनीतिक लक्ष्य नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक अवस्था है। उनकी पंक्ति -

"விடுதலை விடுதலை விடுதலை"

स्वतंत्रता को जीवन - मंत्र के रूप में प्रस्तुत करती है और बालकों में स्वाधीन सोच का विकास करती है। माखनलाल चतुर्वेदी के यहाँ स्वतंत्रता तप,

संयम और बलिदान से प्राप्त मूल्य है, जो आत्मसंयम की माँग करती है। इस प्रकार भारती स्वतंत्रता को उत्सव बनाते हैं, जबकि चतुर्वेदी उसे साधना।

निष्कर्ष :

बाल साहित्य के संदर्भ में महाकवि भारती और माखनलाल चतुर्वेदी की समानता यह सिद्ध करती है कि भाषा भिन्न होने पर भी साहित्य की आत्मा एक हो सकती है। दोनों कवि बच्चों को भयमुक्त, संस्कारित और राष्ट्रचेतन बनाने का स्वप्न देखते हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है और भविष्य के लिए मार्गदर्शक भी। भाषा अलग है, पर उद्देश्य समान है।

संदर्भ :

1) महाकवि भारतीयार कवितैकळ - *மஹாகவி பாரதியார் கவிதைகள்* (Mahakavi Bharatiyar Kavithaigal) - Sri Hindu Publications - 15th Edition - February 2007 - Pg. 171.
2) http://hindwi.org/kavita/wiron-ka-kaisa-ho-wasant-subhadrakumari-chauhan-kavita
3) https://www.amarujala.com/kavya/kavya-charcha/makhan-lal-chaturvedi-poem-pushp-ki-abhilasha - माखनलाल चतुर्वेदी - *पुष्प की अभिलाषा*
4) डॉ. नामवर सिंह - *छायावाद*
5) महाकवि भारतीयार कवितैकळ - *மஹாகவி பாரதியார் கவிதைகள்* (Mahakavi Bharatiyar Kavithaigal) - Sri Hindu Publications - 15th Edition - February 2007 - Pg. 121.
6) हजारी प्रसाद द्विवेदी - *हिंदी साहित्य की भूमिका*
7) टी. पी. मीनाक्षीसुंदरम - *भारती पर आलोचनात्मक लेख*